वाल्मीकि रामायण में पर्यावरण अध्ययन

उर्मिला देवी*

महर्षि वाल्मीकि प्रणीत रामायण एक ऐतिहासिक महाकाव्य है और देश काल की हद में अपने को बाँधकर ही अपने युग की स्थितियों का,अपने समय के परिवेश के पर्यावरण का वर्णन किया है। अतएव पर्यावरण परि और आवरण के दो शब्दों से बना है जिसका शाब्दिक अर्थ है जो चारों ओर से ढ़का हुआ है। अर्थात् हम जीवधारियों के तथा वनस्पतियों के चारों ओर जो आवरण है उसे ही पर्यावरण कहते हैं।

प्रकृति के मनोहर वातावरण में रहने वाले वाल्मीकि के सृजन का विकास पर्यावरण से पृथक नहीं है। वाल्मीकि प्रकृति के रम्य क्रिड़ा में कौञ्च वध की घटना से प्रभावित हो प्रथम काव्य श्लोक को अभिव्यक्त कर प्रभावित हो उठते हैं।

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत् क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्।।

वन में श्री राम से राज्य ग्रहण के लिये प्रार्थना करते हुए भरत जी की बात सुनकर राम द्वारा कहे शब्दों की अभिव्यक्ति प्राकृतिक परिवेश का आधार ग्रहण कर भावमयी एवं अर्थपूर्ण होकर वाल्मीकि के मुख से निकला है। वाल्मीकि रामायण में राजा दशरथ अपने सीमाओं का विवरण देते हुए कहते है कि जहाँ तक सूर्य का चक्र घूमता है वहाँ तक सारी पृथ्वी मेरे अधिकार में है। सीता की खोज में सभी वानरों यूथपतियों के चले जाने पर श्री रामचन्द्रजी का सुग्रीव से यह कहना कि तुम समस्त भूमण्डल के स्थानों का परिचय कैसे जानते हो[१]।

वाल्मीकि रामायण के अयोध्या काण्ड के १५वें सर्ग में पर्यावरण का बहुत ही मनोरम वर्णन, राज्याभिषेक के तैयारी के समय किया गया है। राज्याभिषेक में अनेक सामग्री के एकत्रित हो जाने पर, अनेकों नदियाँ, पवित्र जलाशय कूप और सरोवर तथा जो पूर्व की ओर बहने वाली नदियाँ है, ऊपर की ओर प्रवाह वाले जो सरोवर है तथा दक्षिण और उत्तर की ओर बहने वाली जो (गण्डकी व शोणभद्र) नदियाँ है जिनमें दूध के समान निर्मल जल भरा रहता है। इसके अलावा समस्त समुद्रों से भी लाया हुआ जल वहाँ संग्रह करके रखा गया था, इसके अतिरिक्त दूध, दही, घी, मधु, लावा, कुश, फूल, आठ सुन्दर कन्या, मदमत्त हाथी और दूध वाले वृक्षों के पल्लवों से ढ़के हुए सोने चाँदी के जल से पूर्ण कलश भी वहाँ विराजमान थे, जो उत्तम जल से भरे होने के साथ पद्म और उत्पलों से संयुक्त होने के कारण बड़ी शोभा पा रहे थे[२]।

राम अयोध्याकाण्ड में देवी सीता को वन में न ले जाने के लिए वन के पर्यावरण का वर्णन करते हुए कहते है कि वन में जो नदियाँ होती है उनके भीतर

***शोधच्छात्रा, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद**

ग्राह निवास करते है, उनमें कीचड़ अधिक होने के कारण उन्हे पार करना अत्यन्त कठिन होता है इसके अलावा वन में मतवाले हाथी सदा घूमते रहते है। वहाँ मन को वश में रख कर वृक्षों के स्वतः गिरे हुए फलों के आहार पर ही दिन रात सन्तोष करना पड़ता है। पर्वतों से गिरने वाले झरनों के शब्द को सुनकर उन पर्वतों की कन्दराओं में रहने वाले सिंह दहाड़ने लगते है।

सुग्रीव के दक्षिण दिशा का परिचय देते हुए वहाँ के प्रकृति का वर्णन करते हुए यह कहते है कि लंका को लाँघकर आगे बढ़ने पर सौ योजन विस्तृत समुद्र में एक पुष्पितक नामक पर्वत है, वह चन्द्रमा और सूर्य के समान प्रकाशमान है तथा समुद्र के जल में गहराई तक घुसा हुआ है। वह अपने विस्तृत शिखरों से आकाश में रेखा खींचता हुंआ सा सुशोभित होता है।

पर्यावरण का एक अनोखा वर्णन उस समय का है जब रावण अपनी बहन शूपर्णखा की बातें सुनी और सीता हरण के निमित्त तैयार होकर इच्छानुसार रथ पर आरुढ़ होकर, रावण पर्वत युक्त समुद्र के तट पर पहुँचकर उसकी शोभा देखने लगा, सागर का वह किनारा नाना प्रकार के फल–फूल वाले सहस्रों वृक्षों से व्याप्त था, चारों ओर मङ्गलकारी शीतल जल से भरी हुई पुष्करिणियाँ और वैदिकाओं से मण्डित विशाल आश्रम उस सिन्धु तट की शोभा बढ़ा रहे थे[३]। इसके अलावा कहीं कदलीवन और कहीं नारियल के कुञ्ज शोभा दे रहे थे। साल, ताल, तमाल तथा सुन्दर फुलों से भरे हुए दूसरे वृक्ष तट प्रान्त को अलंकृत कर रहे थे[४]।

जटायु उस समय सो रहे थे, उसी अवस्था में उन्होने सीता की वह करुण पुकार सुनी, सुनते ही तुरंत आँख खोलकर उन्होने विदेह नन्दिनी सीता तथा रावण को देखा[५]। जटायु के आक्रमण से रावण ने सीता को छोड़ दिया और जटायु को मारने लगा। इससे यह पता चलता है कि पशु–पक्षी भी कितना सजग एवं सचेत रहते थे और समय आने पर वे प्राणों की रक्षा भी करते थे। राम सुग्रीव से मित्रता कर वर्षा काल आ जाने पर राम लक्ष्मण दोनों ने उसी प्रस्रवण पर्वत पर एक मास बिताया।

पर्यावरण का एक उदाहरण अयोध्याकाण्ड में है जिसमें वाल्मीकि जी यह बताते हैं कि उस समय गंगा का जल इतना पवित्र एवं शुद्ध था कि देवता, दानव, गन्धर्व और किन्नर उन शिवस्वरुपा भागीरथी की शोभा बढ़ाते हैं। नागों और गन्धर्वों की पत्नियाँ उनके जल का सदा सेवन करती है। गंगा के दोनों तटों पर देवताओं के सैकड़ो पर्वतीय क्रीड़ास्थल है। उनके किनारे देवताओं के बहुत से उद्यान भी है[६]। गंगा नदी की सुन्दरता का वर्णन करते हुए वाल्मीकि कहते है कि हंसो और सारसों के कलरव वहाँ गूजते रहते है, चकवे उस देवनदी की शोभा बढ़ाते हैं। सदा मदमत्त रहने वाले विहंगम् उनके जल पर मँडराते रहते हैं। वे उत्तम शोभा से सम्पन्न हैं। किन्तु आज जो गंगा का जल जीव जन्तुओं के लिये भी उपयोगी नहीं रह गयी है।

गोदावरी नदी से राम के पूछने पर की सीता कहाँ है, गोदावरी ने दुरात्मा रावण के उस रुप और कर्म को याद करके भय के मारे गोदावरी नदी ने वैदेही के विषय में श्रीराम से कुछ नहीं कहा[७]। ऋषि वसिष्ठ कैकेयी से कहते हैं कि कैकेयी

तु आज ही देखेगी कि वन को जाते हुए श्रीराम के साथ पशु, पक्षी, सर्प और मृग भी चले जा रहे हैं औरों की बात ही क्या वृक्ष भी उनके साथ जाने को उत्सुक है[८]। पर्यावरण का एक मार्मिक दर्शन हमें अयोध्याकाण्ड के ०४/४०/१८–१६ में मिलता है जब राम लक्ष्मण सीता वन की ओर प्रस्थान करते हैं तब उस समय समस्त पुरवासी और सैनिक दर्शक रुप में आये। बाहरी लोगों को भी मूर्च्छा आ गयी, उस समय सारी अयोध्या में महान कोलाहल मच गया सब लोक व्याकुल होकर घबरा उठे। मतवाले हाथी श्रीराम के वियोग से कुपित हो उठे और इधर–उधर भागते हुए घोड़ों के हिनहिनाने एवं उनके आभूषणों के खनखनाने की आवाज सब ओर गूंजने लगी। अयोध्यापुरी के आबाल वृद्ध सब लोग अत्यन्त पीडित होकर श्रीराम के पीछे दौड़े जैसे धूप से पीडित हुए प्राणी पानी की ओर भाग जाते है[९]।

अयोध्याकाण्ड में वन में जाते समय राम को देख रनवास की स्त्रियों का विलाप और उस दिन अहोरात्र बन्द हो गया, गृहस्थों के घर भोजन नहीं बना, प्रजा ने कोई काम नही किया। सूर्यदेव अस्ताचल को चले गये। हाथियों ने मुँह में लिया हुआ चारा छोड़ दिया, गौओ ने बछड़ों को दूध नहीं पिलाया और पहले पहल पुत्र को जन्म देकर भी कोई माता प्रसन्न नही हुई। त्रिशंकु, मंगल, गुरु, वुद्ध तथा अन्य समस्त ग्रह शुक्र, शनि आदि रात में वक्र गति से चन्द्रमा के पास पहुँचकर दारुण होकर स्थित हो गये।

अयोध्याकाण्ड ०२/४५/३०–३२ के सर्ग में राम को वन जाते समय ब्राह्मण समुदाय राम को रोकते हुए कहते है कि हे राम संसार के स्थावर जंगल, सभी प्राणी आपको रुकने के लिए कह रहे है। वृक्ष, पशु, पक्षी, तमसा नदी अपनी अपनी क्रियाओं से आपको रोक रही हैं।

वाल्मीकि रामायण के ०२/५४/३० अयोध्याकाण्ड में पर्यावरण का एक उत्तम उदाहरण है कि जो व्यक्ति उस चित्रकूट पर्वत का दर्शन कर लेता है, उसके कल्याणकारी पुण्य कर्मो का फल पा लेता है, और उसका कभी पाप कर्म में मन नहीं लगता, अतः उस समय पर्वतादि का कितना महत्व होता था, और उस चित्रकूट पर्वत का महत्व यह बताता हैं कि वहाँ बहुत से ऋषि जिनके सिर के बाल वृद्धावस्था के कारण सफेद हो गये थे, सैकड़ों वर्षों तक तपस्या करके स्वर्ग लोक को चले गये[१०]।

वाल्मीकि रामायण में पर्यावरण संरक्षण का एक उपाय भी हमें मिलता है। भरत के द्वारा राजा दशरथ का श्राद्धकर्म करने के बाद भाई राम को राजा बनाने के लिए, वन में जाते समय अनेक अनुचरों द्वारा रास्ता साफ करना झाड़ी आदि साफ करना तथा जहाँ पर वृक्ष नहीं थे वहाँ कुछ लोगों ने वृक्ष भी लगाये[११], और भरद्वाज ऋषि के आश्रम में पहुँचने पर ऋषि के द्वारा आतिथ्य सत्कार विधिपूर्वक करते हुए ऋषि के तेज से बेल के वृक्ष मृदंग बजाते हैं, बहेड़े के वृक्ष शम्या नामक ताल देते हैं और पीपल के वृक्ष वहाँ नृत्य करते थे। तदन्तर, देवदारु, ताल, तिलक और तमाल नामक वृक्ष कुबड़े और बौने बनकर बड़े हर्ष के साथ भरत की सेवा में उपस्थित हुए[१२]।

राम लक्ष्मण को पंचवटी का दृश्य दिखाते हुये उसकी सुन्दरता का वर्णन करते हुए कहते हैं कि स्थान स्थान पर सोने चाँदी तथा ताँबे के समान रंग वाले सुन्दर गैरिक धातुओं से उपलक्षित ये पर्वत ऐसे प्रतीत हो रहे हैं मानों झरोखे के आकार में की गयी नीले पीले और सफेद आदि रंगों की उत्तम श्रृंगार रचनाओं से अलंकृत हाथी शोभा पा रहे हैं[१३]। पर्यावरण का एक बहुत ही वीभत्स्वरुप देखने को मिलता है जब श्रीराम ने खर व दूषण के द्वारा युद्ध करने पर अनेकों राक्षसों के द्वारा मारे जाने पर उस समय वहाँ रक्त और मांस के कीचड़ जम गया। अतः महाभयंकर वन नरक के समान प्रतीत होने लगा[१४]।

अतः स्पष्ट है कि वाल्मीकि रामायण में पर्यावरण अध्ययन को मानवीकरण का एक रुप माना है। रामायण कालीन नदी को पवित्र मान उनका यथा समय विधि पूजन होता था और वे नदियाँ पवित्र मानकर उनका अनैतिक तरीके से उपयोग वर्जित था और नदियों का जल ही वर्षा का कारण होता था। वैसे भी नदी को उस समय एक देवता के रुप में मानकर ही उनका सेवन व सुरक्षा की जाती थी किन्तु अब नदी को एक जल स्रोत का साधन मानकर अन्धाधुन्ध अनैतिक उपयोग से प्रदूषण फैल रहा है। रामायण में नदी को देवी के रुप में वर्णित किया गया है और राम भी नदी के दर्शन को अपना सौभाग्य मानते हैं और नदी पार करने के लिए उनसे प्रार्थना भी की। उस समय नदी व वृक्ष पशु व पक्षी सारा स्थावर जङ्गम् की एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे। पशु पक्षी को भी सुरक्षा एवं दैव रुप में मानकर किसी न किसी देवता से सम्बन्धित कर उनकी रक्षा करते थे। वे भी उसी तरह मानव से ताल मेल बनाये रखते थे। आज के युग में नदी को एक जल, वृक्ष को एक मात्र उद्योग एवं पशु को एक आहार के रुप में ग्रहण की प्रवृत्ति हो गयी है जो रामायण युग में कहीं नही था। अतः आज के औद्योगिक युग में बढ़ते हुए प्रदूषण की समस्या को हम रामायण कालीन व्यवहारों को अपनाकर अपने पर्यावरण को फिर से हरा भरा एवं नदी को जल से पूरित तथा पशु पक्षियों को अपना योग देने में एक सफल भूमिका निभा सकते हैं।

सहायक ग्रन्थ सूची

१. वाल्मीकि रामायण ०४/४६/०१
२. वाल्मीकि रामायण ०२/१५/०६–०८
३. वाल्मीकि रामायण ०३/३५/११–१२
४. वाल्मीकि रामायण ०३/३५/१३
५. वाल्मीकि रामायण ०३/५०/०१
६. वाल्मीकि रामायण ०२/५०/१४–१५
७. वाल्मीकि रामायण ०३/६४/०६
८. वाल्मीकि रामायण ०२/३७/३३
९. वाल्मीकि रामायण ०२/४०/१८–२०
१०. वाल्मीकि रामायण ०२/५४/३०–३१
११. वाल्मीकि रामायण ०२/८०/७
१२. वाल्मीकि रामायण ०२/९१/४९–५०
१३. वाल्मीकि रामायण ०३/१५/१५
१४. वाल्मीकि रामायण ०३/२६/३६